८८: जागृति रूप में विचार क्रम

०६-०७-१३

विचार क्रम क्रमशः जंगल युग में जानवरों के साथ संघर्ष के रूप में विचार होना सहज रहा | उसके बाद पत्थर युग, उसके बाद धातु युग, धातु युग के बाद बारूद युग, बारूद युग के बाद मिसाइल युग हुआ | क्रम से मानव से ही विचार के साथ कार्य होता रहा | इसको अनुमान किया जा सकता है | कोई करते भी हों, कोई आपत्ति नहीं | इसी क्रम में जंगल युग से, जंगल युग के अंत में वेद सुनने में आया | वेद विचार के अनुसार विचार पूर्ण माना गया | विचार ही रहा, कार्य व्यवहार में परिणत नहीं हुआ | कार्य व्यवहार में जो कुछ भी परिणत करने का कोशिश किया वह परम्परा बना नहीं | परम्परा बदलता रहा | अभी की स्थिति में वेद मूर्तियों का सन्तान विदेशों में निवास करने के लिये जा रहा है | मैं स्वयं वेद मूर्तियों के परिवार का सन्तान हूँ | मेरा परिवार, मेरा मामा का परिवार, मेरा चाचा का परिवार में से कई लोग विदेशों में चले गये हैं | इस क्रम में देखने पर पता लगता है कि पीढ़ी से पीढ़ी में विचार के तरीके बदलते रहे | पीढ़ी से पीढ़ी विचार परिवर्तन के पक्ष में काम करता रहा, जीता रहा | अभी तक की परिणति समुदाय के रूप में आया | अनेक समुदाय के रूप में, विभिन्न समुदाय मिल करके एक-एक देश बनाया है | देश में धर्मनीति, राजनीति दोनों प्रभावित रहा |

आदिकाल में धर्म प्रधान राज्य रहा, धर्म सामुदायिक रहा | सार्वभौम नहीं रहा | इस क्रम में विचार करने का काम मानव ही करता रहा, कोई जानवर नहीं करता है, कोई झाड़ पौधा नहीं करता है, माटी पत्थर नहीं करता रहा | जो कुछ भी विचार किया है मानव ही किया है | विचारों में परिवर्तन होता रहा, इसी क्रम में विकल्प भी प्राप्त हुआ | विकल्प के अनुसार सार्वभौमता, अखण्डता, समाधान, समृद्धि चार बात प्रधान है | समृद्धि को श्रम से पाया जाता है | सभी को यदि समृद्ध होना है, वह श्रमपूर्वक ही होगा | सभी श्रम करने से समृद्धि होना स्वाभाविक है | अभी की स्थिति में १० से १५% लोग काम करते हैं | फलस्वरुप इतना ज्यादा उत्पादन होता है | ये सारे उत्पादन श्रमशीलता के साथ ही बना है | श्रम के बिना उत्पादन होता नहीं | इस क्रम में व्यापार विधि से ये भी बताया जाता है कि श्रम नहीं करना चाहिए | व्यापार भी श्रमपूर्वक ही होता है | श्रम के बिना कोई उत्पादन नहीं होता,न ही व्यापार होता है | मनुष्य ही श्रम करने वाला है | मनुष्य के अनुसार कोई जानवर भी श्रम करते होंगे | यंत्र तो करता नहीं | यंत्र को बेचने के लिये जानवरों का श्रम को कम कर दिया, मनुष्य का श्रम को कम कर दिया | यदि सब कोई श्रम करना छोड़ दें तो उत्पादन क्या होगा? यंत्र के हाथ में कुछ उत्पादन हो सकता है? यंत्र भी मनुष्य ही बनाएगा | मनुष्य को छोड़ करके दूसरा कोई विनिमय के लिये नहीं है |

सर्वाधिक पक्ष, सर्वाधिक वस्तु मनुष्य ही उपयोग करेगा | इसमें देखा गया, सामान्याकांक्षा के रूप में जो आहार, आवास, अलंकार को पाता है, यह आवश्यकता से अधिक होने से संतुष्टि होती है | अधिक कितना होना है, यह अभी तक तय नहीं है | इसलिये उत्पादन में भागीदारी, विनिमय में भागीदारी, धर्म और राज्य में भागीदारी ही एकमात्र रास्ता है | धर्म को सुख रूप में देखा गया है | हर मानव सुखी होना चाहता है | दूसरी भाषा से सुखी होने के लिये सब कुछ करता है | चोरी,चकारी भी सुखी होने के लिये ही करता है | क्या किया जाय? तब यह विकल्प आ गया | विकल्प आने से यह प्रस्तावित है कि विचार के अनुसार समाधान को पाता है | समाधान अनुभव के आधार पर आता है | अनुभव सह-अस्तित्व में होता है | इस क्रम में मनुष्य

अपने को सार्थक बना सकता है | सार्थकता का मतलब पहले कह चुके हैं | यह समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व ही है | सह-अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिये समाधान चाहिए, न्याय चाहिए, सत्य चाहिए | इस प्रकार मानव समृद्धि के साथ ही समाधान, सत्य और न्याय का पालन करता है | इसकी अपेक्षा ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों को है- न्याय की अपेक्षा | विचार क्रम में जब तक सह-अस्तित्व में अनुभव का स्वीकृति नहीं आता है तब तक न्याय मिलने वाला नहीं है | सह-अस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से ही विचार, विचार के अनुसार व्यवहार-कार्य सम्पन्न होता है | इसे भले प्रकार से देखा गया है | हर व्यक्ति सर्वेक्षण कर सकता है, समझदारी के आधार पर |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)